आर्य समाज : अंगारे पर घेरती राख.

भारतवर्ष के इतिहास में १९वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नव-जागरण का आरंभ होता है. ब्राह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज आदि कई सामाजिक सुधार और जनजागरण करने के संगठन बने. बंगाल में ब्राह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय अधिक प्रभावशाली प्रमाणित हुए. उन्होंने स्त्रियों की दशा सुधारने, सती प्रथा आदि रोकने का प्रशंसनीय कार्य किया. ब्राह्म समाज की निर्बलता यह थी कि राजा राममोहन राय अंग्रेजी शासन और अंग्रेजी भाषा को भारतवर्ष की उन्नति के लिए आवश्यक समझते थे. इसका फल यह हुआ कि ब्राह्मसमाज भारत की साधारण जनों की मानसिकता को अपने प्रभाव में न ले सका क्योंकि इसका प्रेरक तत्व विदेशी था.

ब्राह्मसमाज के कुछ वर्षोंके पश्चात् सन १८७५ ई० में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को स्वामी दयानंद सरस्वती ने मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की. स्वामी दयानंद और आर्य समाज की चिंतनधारा वेद, शास्त्र, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, भगवान् श्री राम, योगेश्वर श्रीकृष्ण आदि भारतीय ऐतिहासिक विरासत का प्रचार करने लगी. आर्य समाज सुधार कि वाणी बोलता था किन्तु इसकी कार्यशैली में बहु-आयामी तथा बहुमुखी क्रांति का शंखनाद था. यह वैचारिक क्रांति दैवी ज्वाला की तरह भारतवर्ष में तथा भारतवर्ष के बाहर यूरोप, अमेरिका, कनाडा, अरब, अफ्रीका आदि में फ़ैल गयी. अमेरिका के प्रसिद्ध विचारक डॉ. एंड्रयू जैक्सन डेविस ने कहा है - "मैं एक ऐसी अग्नि को देखता हूँ जो सर्वव्यापक है, वह अप्रमेय प्रेम कि अग्नि है, जो सर्वविद्वेष को भस्मसात करने के लिए प्रज्वलित हो रही है. वाग्मियों, कवियों और पवित्र पुस्तक-प्रणेताओं के मनोभावों के रूप में उसकी लपकती ज्वालायें यत्र-तत्र दृष्टिगोचर हो रही हैं. आर्य समाज नामक अग्निकुण्ड में यह अग्नि प्रकट हुयी है. इश्वर के प्रकाश से ज्योति प्राप्त करने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती के ह्रदय में यह अग्नि प्रादुर्भूत और प्रज्वलित हुयी थी. हिन्दू, मुसलमान और ईसाई, सब इस अग्नि को बुझाने के लिए दौड़े किन्तु यह स्वर्गीय अग्नि भारतवर्ष में और भारतवर्ष के बाहर भी बढती और फैलती ही गयी." उस समय भारतवर्ष में म्यान्मार (बर्मा), सिंगापुर, इंडोनेशिया आदि सब में यह सुधार कि ज्वाला फ़ैल गयी. इस समय संसार के प्रायः सभी देशों में और प्रमुख शहरों में आर्य समाज का संगठन कार्य कर रहा है.

आफ्रीका के कई देशों में, टापुओं में, मॉरिशस, फ़िजी, गुयाना, केन्या आदि में जहाँ भारतीय मूल के लोग बसे हैं, वहां आर्य समाज अत्यंत प्रभावपूर्ण धार्मिक और सामाजिक कार्य कर रहा है. आर्य समाज के प्रभाव में इस्लामी जगत भी इतनी निष्ठा से सम्मिलित हुआ था कि खलीफाओं के देश के प्रसिद्ध नगर बगदाद के आर्य समाज ने उस समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली को

एक हज़ार रुपये सहयोग में दिया था जिसका मूल्य आज के दिन लाखों का होगा और इन्हीं रुपयों से सार्वदेशिक सभा ने सन १९२४ ई० में आर्य पर्व-पद्धति पुस्तक छापी थी. यह तो अंग्रेजों की फूट डालो और राज्कारो की नीति ने ईसाई और मुसलमानों को आर्य समाज का विरोधी बना दिया.

आर्य समाज के कार्य बहुमुखी रहे हैं. समाज सुधार, छुआ-छूत को मिटाना, जातिगत, जन्मना ऊंच-नीच के भाव को मिटाना, बाल-विवाह रोकना, विधवा विवाह को प्रोत्साहन देना, कन्याओं के लिए स्कूल, कॉलेज, गुरुकुल खोलना, अछूतों, जनजातियों आदि सभी पिछड़े हुए वर्गों को बिना किसी भेदभाव के स्कूल, कॉलेज और गुरुकुलों में स्थान देना, वेद-वेदांग आदि के अध्यापन के लिए गुरुकुल खोलना, आदि सब आर्य समाज के प्रोग्राम में है. आर्य समाज ने म्रियमाण हिन्दू जाति को संजीवनी बूटी पिला दी. आर्य समाज से पहले ईसाई मिशनरी और इस्लामिक प्रचारक हिन्दू देवी-देवताओं कि खुलेआम भर्त्सना करते थे और हिन्दुओं को बिना किसी बाधा के धर्मान्तरित कर रहे थे. स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के प्रचारक हिन्दुओं की रक्षा तो करने ही लगे, साथ ही अन्य मतावलंबियों को पुनः हिन्दू भी बनाने लगे. उस समय आर्य समाज जनमानस में अग्निपिण्ड की तरह दहक रहा था.

आर्य समाज का विरोध : आर्य समाज के विरोध में कट्टरपंथी हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सभी टूट पड़े. आर्य समाज अंग्रेजी शासन, अंग्रेजी माध्यम, अंग्रेजी सभ्यता संस्कृति, सबका विरोध करता था. अतः सबसे पहले अंग्रेजी सरकार ने आर्य समाज को दबाने का प्रयास किया. शासन की ओर से कई जगह कई अभियोग चलाये गए किन्तु सर्वत्र आर्य समाज विजयी रहा. आर्य समाज ने कई धर्मिक्ल युद्ध किये. निजाम हैदराबाद के शासक ने हिन्दुओं पर कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगाये थे और अनेक प्रकार से हिन्दुओं को वहां पीड़ित किया जाता था. १९३७ में आर्य समाज ने निजाम के विरुद्ध सत्याग्रह किया और कई सत्याग्रहियों के बलिदान के पश्चात् निजाम सरकार ने घुटने टेक दिए और निजाम हैदराबाद के राज्य में हिन्दुओं को धार्मिक अधिकार प्राप्त हुए. इस विजय से आर्य समाज की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गयी. १९४७ के स्वतंत्रता के समय सिंध प्रान्त में मुस्लिम लीगी सरकार थी. उसने स्वामी दयानन्द के महँ ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने की घोषणा की. इस पर आर्य समाज ने सिंध सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह करने का निश्चय किया. इससे सिंध की लीगी सरकार घबरा उठी और उसने प्रतिबन्ध का आदेश वापस ले लिया. इससे भी आर्य समाज का गौरव बढ़ गया. स्वतंत्र भारत में नेहरु जी की प्रेरणा से पंजाब में कैरों सरकार ने हिंदी भाषा के विरुद्ध प्रतिबन्ध लगाया और आर्य समाज ने हिंदी-रक्षा आन्दोलन छेड़कर सत्याग्रह किया. इसमें भी आर्य समाज सफल रहा. ये सब बहरी विरोध थे. उन्हें आर्य समाज ने बड़े उत्साह से दबा दिया.

आन्तारिक प्रतिकूलता : **(१)** बाहरी विरोधों को लड़कर दबाया जाता है किन्तु आतंरिक प्रतिकूलताएं दीर्घकालिक प्रभाव डालती हैं. कांग्रेस के प्रसिद्ध इतिहासकार लेखक श्री पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के समय कांग्रेस में लगभग ८०% लोग आर्य समाज से प्रभावित थे. उस समय देश को प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारें बनाने के लिए तपे-तपाये ईमानदार देश-सेवक नेताओं की आवश्यकता थी. इस प्रशासनिक आवश्यकता ने आर्य समाज के प्रथम कोटि के बहुत सारे नेताओं को सरकार में ले लिया. इतनी बड़ी संख्या में प्रथम कोटि के कार्यकर्ताओं का शासन द्वारा अपहरण (हाइजैक) किये जाने ने आर्य समाज के संगठन पर आतंरिक राख का काम किया और आर्य समाज के अंगारे पर मलिनता का प्रभाव डाला. (२) नकली सिक्के असली मूल्यवान सिक्कों को प्रचालन से हटा देते हैं. आर्य समाज के कार्यकर्ताओं का देश में बड़ा सम्मान था. न्यायालय भी कई बार आर्य समाजियों की सच्चाई, ईमानदारी पर मुहर लगा देते थे. इस सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रलोभन में कई नकली दिखावटी नेता आर्य समाज के नेतृत्व में घुस आये. आर्य समाज अत्यंत जनतांत्रिक संगठन है और ये दिखावटी आर्य समाजी आर्य समाज के संगठन पर हावी होकर अधिकार में आ गए. इसने भी आर्य समाज के तेज को धूमिल किया. (३) त्यागी, सन्यासी, विद्वान, समाज-सेवक अधिकारियों की जगह स्वार्थी, पद-लोलुप लोगों का समाज पर आधिपत्य बढ़ने लगा. (४) दलबन्दी की दलदल में आर्य समाज का संगठन फँस गया. जब दलबंदी सीमारेखा पार कर जाती है तब संगठन अपने मूल उद्दयेश्य से भटक केर स्वार्थों में उलझ जाता है. इसी में संगठन का वर्चस्व धूमिल हो जाता है. (५) सेवा करने की जगह मेवा-भोगी कार्यकर्ता नेता कुर्सी-चिपक बन केर संगठन को अपने निजी स्वार्थों में, निजी प्रतिष्ठा में भुनाने लगते है. (६) कहीं-कहीं समाज की अचल संपत्तियों को बेचकर तथा आर्य समाज के भवनों, अतिथिशालाओं आदि का आर्थिक रूप से दुरुपयोग करने वाले कई लोग संगठन में प्रभावी हो गए हैं. (७) सबसे बढ़कर तेजस्वी नेतृत्व का अभाव आर्य समाज रुपी अंगारे पर राख चढ़ा रहा है.

इतनी सारी प्रतिकूल परिस्थितियों के रहने पर भी एक स्वर्णिम किरण से यह आशा दिखती है की दो-चार सौ नियंत्रण करने वाले नेताओं को छोड़कर लगभग सारा आर्य समाज संगठन ऋषि दयानन्द और उनके सिद्धांतों के प्रति ईमानदारी से निष्ठावान है.

लेखक - प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

ईशावास्यम्

पी – ३०, कालिन्दी हाउसिंग स्कीम,

कोलकाता - ७०००८९.

दूरभाष:०९४३२३०१६०२/(०३३)२५२२२६३६